फ्रांसीसी क्रांति

French Revolution — 1789 | UPSC & UPPSC मुख्य परीक्षा विशेष नोट्स

CSMP IAS
गोमती नगर, लखनऊ
+91 8887039761
www.csmpias.com

★ UPPSC 2024 के दोनों प्रश्नों के विस्तृत उत्तर इस PDF में शामिल हैं ★

विषय	पृष्ठ
परिचय, पृष्ठभूमि एवं तीन एस्टेट प्रणाली	2–3
क्रांति के कारण (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक)	4–5
दार्शनिकों की भूमिका — प्रबोधनकाल	6–7
क्रांति की प्रक्रिया एवं प्रमुख घटनाएँ	8–9
नेपोलियन — उदय, सुधार, पतन	10–13
महाद्वीपीय व्यवस्था	14
वियना कांग्रेस 1815	15
क्रांति का प्रभाव एवं स्वरूप	16–17
★ UPPSC 2024 PYQ — नेपोलियन क्रांति का पुत्र था	**18**
★ UPPSC 2024 PYQ — प्रबोधनकाल का सुपरिणाम	**19**
शब्दावली, तिथिक्रम, परीक्षा रणनीति	20

अध्याय 1 : फ्रांसीसी क्रांति — परिचय एवं पृष्ठभूमि

1.1 सामान्य परिचय

फ्रांसीसी क्रांति (1789) विश्व इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है जिसने न केवल फ्रांस, बल्कि पूरी दुनिया की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया। यह क्रांति **स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व** के नारों पर आधारित थी।

1.2 एक दृष्टि में प्रमुख तथ्य

विशेषता	विवरण
क्रांति का वर्ष	1789 (14 जुलाई 1789 — बास्तील दिवस)
स्थान	फ्रांस (यूरोप)
मुख्य नारा	Liberté, Égalité, Fraternité (स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व)
पूर्व की स्थिति	पुरातन व्यवस्था (Ancien Régime) — तीन एस्टेट प्रणाली
राजनीतिक प्रभाव	निरंकुश राजतंत्र का अंत, गणतंत्र की स्थापना
सामाजिक प्रभाव	सामंतवाद का अंत, मानवाधिकारों की घोषणा
नेपोलियन बोनापार्ट	1799 में सत्ता में आया, 1815 तक शासन
वियना कांग्रेस	1815 — यूरोपीय व्यवस्था की पुनर्स्थापना

1.3 पुरातन व्यवस्था — तीन एस्टेट प्रणाली (Ancien Régime)

क्रांति से पूर्व फ्रांस में **पुरातन व्यवस्था (Ancien Régime)** विद्यमान थी। राजनीतिक स्तर पर निरंकुश राजतंत्र था तथा कुलीनों के माध्यम से शासन चलाया जाता था।

एस्टेट	समूह	विशेषाधिकार	कर / स्थिति
प्रथम एस्टेट (First Estate)	पादरी वर्ग (Clergy)	उच्च पादरी — राज्य से मान्यता प्राप्त ; चर्च की संपत्ति पर नियंत्रण	कर से पूर्ण मुक्ति ; प्रशासनिक पदों पर नियुक्त
द्वितीय एस्टेट (Second Estate)	कुलीन वर्ग (Nobility)	ज़मींदार, जागीरदार ; सेना में उच्च पद ; न्यायिक शक्ति	कर से मुक्ति ; सामंती शोषण का अधिकार
तृतीय एस्टेट	जनसाधारण (Commoners)	किसान, मज़दूर, मध्यवर्ग, व्यापारी — कोई राजनीतिक अधिकार नहीं	सम्पूर्ण कर का बोझ ; शोषण का शिकार

(Third Estate)			

★ UPSC महत्वपूर्ण : फ्रांस की 98% जनता तृतीय एस्टेट में थी, फिर भी उन पर 100% कर का बोझ था — यही असंतोष का मूल था।

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 2 : क्रांति के कारण — राजनीतिक एवं सामाजिक

2.1 राजनीतिक कारण (Political Causes)

- **निरंकुश राजतंत्र :** फ्रांस में दैवीय सिद्धांत पर आधारित निरंकुश राजतंत्र था। राजा की इच्छा ही कानून थी।
- **लुई XVI की संवेदनहीनता :** लुई XVI एक कमज़ोर एवं संवेदनहीन शासक था जो प्रजा की भलाई के प्रति उदासीन था।
- **जनप्रतिनिधित्व का अभाव :** जनता का शासन में कोई प्रतिनिधित्व नहीं था। Estate-General की बैठक 175 वर्षों से नहीं हुई थी।
- **न्यायिक भ्रष्टाचार :** न्यायालयों में भ्रष्टाचार व्याप्त था; कुलीनों को विशेष न्यायिक संरक्षण प्राप्त था।

2.2 सामाजिक कारण (Social Causes)

फ्रांस का समाज भारी विषमता से ग्रस्त था। मूलतः यह समाज **विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग** (पादरी एवं कुलीन) तथा **अधिकार विहीन वर्ग** (जनसाधारण) में विभाजित था।

सामाजिक समस्या	विवरण	प्रभावित वर्ग
असमान कर प्रणाली	तृतीय एस्टेट पर पूरा कर का बोझ; प्रथम एवं द्वितीय एस्टेट कर मुक्त	किसान, मज़दूर, व्यापारी
अधिकारों का अभाव	जनसाधारण को कोई राजनीतिक अधिकार नहीं था	पूरा तृतीय एस्टेट
सामाजिक भेदभाव	प्रथम-द्वितीय एस्टेट को विशेषाधिकार; तृतीय को अपमान व शोषण	सार्वजनिक
सर्फ़ / बंधुआ प्रथा	किसानों को जमींदारों के खेत में बिना मज़दूरी काम करना पड़ता था	ग्रामीण किसान
मध्यवर्ग का असंतोष	शिक्षित मध्यवर्ग को प्रशासनिक पदों में प्रवेश नहीं; कुलीनों से गहरा असंतोष	शिक्षित मध्यवर्ग

2.3 आर्थिक कारण (Economic Causes)

फ्रांस की निरंतर कमज़ोर होती आर्थिक स्थिति ने क्रांति का ठोस आधार तैयार किया। फ्रांस सात वर्षीय युद्ध, ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार संघर्ष, एवं अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी से राजकोष पर भारी बोझ पड़ा था।

आर्थिक समस्या	कारण	परिणाम
राजकोषीय संकट	लंबे युद्धों के खर्चे, अमीर वर्ग से कर वसूली नहीं	सरकार दिवालियेपन की कगार पर
खाद्य संकट	1788 में भयंकर अकाल; फसल नष्ट	जनसाधारण भूखे मरने की स्थिति में

रोटी का मूल्य वृद्धि	अनाज की भारी कमी ; जमाखोरी	पेरिस की जनता सड़कों पर उतरी
असमान कर नीति	कर केवल तीसरे एस्टेट पर, अमीरों को पूरी छूट	जन असंतोष चरम पर
व्यापारिक संकट	इंग्लैंड से व्यापार समझौते से फ्रांसीसी कारखाने बंद	बेरोज़गारी में भारी वृद्धि

📝 स्मरणीय : फ्रांस की क्रांति की गरीबी के कारण नहीं, बल्कि सभी संपन्न कारणों के संयुक्त प्रभाव से हुई। क्रांति स्वतंत्रता के लिए थी, न कि समानता के लिए। अर्थात् मध्यम Estate समानता की पाहट रखता था।

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 2 (जारी) : बौद्धिक / दार्शनिक कारण — प्रबोधनकाल

2.4 प्रबोधनकाल (Enlightenment) — क्या था ?

प्रबोधनकाल (Enlightenment) 17वीं-18वीं शताब्दी में यूरोप में उभरा वह बौद्धिक आंदोलन था जिसने तर्क, विज्ञान, एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सर्वोच्च महत्व दिया। इसने चर्च की निरंकुशता, राजशाही के दैवीय अधिकार, एवं सामंती व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाए।

दार्शनिक	देश	मुख्य विचार	क्रांति पर प्रभाव
जॉन लॉक (John Locke)	इंग्लैंड	जीवन, संपत्ति, स्वतंत्रता के प्राकृतिक अधिकार; सामाजिक समझौता; शासन की सीमाएँ	मानवाधिकारों की घोषणा का आधार बना
वॉल्टेयर (Voltaire)	फ्रांस	धार्मिक असहिष्णुता का विरोध; अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता; व्यक्ति स्वतंत्रता; बुद्धिवाद	चर्च और राजशाही की आलोचना; जन-चेतना जागृत की
मॉन्टेस्क्यू (Montesquieu)	फ्रांस	शक्तियों का पृथक्करण — विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका (Spirit of Laws)	संसद एवं लोकतांत्रिक शासन की नींव रखी
रूसो (Rousseau)	फ्रांस (जिनेवा)	"मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है किंतु सर्वत्र ज़ंजीरों में है।" सामाजिक समझौता; जन-इच्छा (General Will)	लोकतांत्रिक भावना की प्रेरणा; क्रांतिकारियों का प्रिय दार्शनिक
फिज़ियोक्रेट्स (Quesnay, Turgot)	फ्रांस	मुक्त व्यापार, कृषि को आर्थिक आधार, कर सुधार, Laissez-faire नीति	आर्थिक सुधारों की माँग; सरकार की आर्थिक नीति की आलोचना

2.5 दार्शनिकों की भूमिका — दो दृष्टिकोण

मत (A) — दार्शनिकों ने क्रांति उत्पन्न की	मत (B) — दार्शनिकों की भूमिका नहीं थी
▸ दार्शनिकों ने क्रांतिकारी विचार दिए जो जनता में फैले।	▸ रूसो यदि पालने में भी मर जाता तो भी फ्रांस में क्रांति होती।
▸ रूसो के "जन-इच्छा" सिद्धांत ने क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।	▸ क्रांति के लिए केवल परिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं, विचार नहीं।
▸ वॉल्टेयर ने चर्च एवं राजशाही की आलोचना से जन-जागरण किया।	▸ दार्शनिकों ने क्रांति की बात कभी स्पष्ट रूप से नहीं की थी।

✔ **निष्कर्ष :** दार्शनिकों ने क्रांति को उत्पन्न नहीं किया, किंतु **मानसिक चेतना एवं वैचारिक आधार तैयार** करने में उनकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने जनता को समानता, स्वतंत्रता व बंधुत्व के विचारों से परिचित कराया और एक शोषण-मुक्त समाज की कल्पना प्रस्तुत की।

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 3 : क्रांति की प्रक्रिया — प्रमुख घटनाएँ

3.1 कालक्रम (Timeline of Events)

5 मई 1789 — **Estate-General की बैठक :** लुई XVI ने वित्तीय संकट हल करने के लिए 175 वर्षों बाद तीनों एस्टेट की बैठक बुलाई। तृतीय एस्टेट ने "प्रति व्यक्ति मतदान" की माँग की पर अस्वीकार हुई।

17 जून 1789 — **राष्ट्रीय सभा (National Assembly) की घोषणा :** तृतीय एस्टेट ने स्वयं को राष्ट्रीय सभा घोषित किया — राजा को पहली सीधी चुनौती।

20 जून 1789 — **टेनिस कोर्ट की शपथ :** नया संविधान बनाने की शपथ — "हम तब तक नहीं हटेंगे जब तक संविधान न बने।"

14 जुलाई 1789 — **बास्तील दुर्ग पर हमला :** जनता ने बास्तील का किला तोड़ दिया — क्रांति की प्रतीक घटना। अब राष्ट्रीय दिवस (14 July)।

4 अगस्त 1789 — **सामंतवाद की समाप्ति :** कुलीनों एवं पादरियों ने अपने विशेषाधिकार स्वेच्छा से त्यागे — सामंती व्यवस्था का अंत।

26 अगस्त 1789 — **मानवाधिकारों की घोषणा :** नागरिकों के मूलभूत अधिकार घोषित — स्वतंत्रता, समानता, संपत्ति, सुरक्षा, अत्याचार का प्रतिरोध।

21 जनवरी 1793 — **लुई XVI को गिलोटीन :** राजा को फाँसी — राजशाही का सच्चा अंत ; प्रथम फ्रांसीसी गणतंत्र की स्थापना।

1793–94 — **आतंक का राज (Reign of Terror):** रोब्सपियर का निरंकुश शासन — गिलोटीन द्वारा 40,000 से अधिक की मृत्यु।

27 जुलाई 1794 — **थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया (9 Thermidor):** रोब्सपियर को गिरफ्तार कर गिलोटीन — आतंक के राज का अंत।

1795–99 — **Directory का शासन :** 5 सदस्यीय Directory — भ्रष्टाचार, अव्यवस्था, बेरोज़गारी ; नेपोलियन का उदय।

9 नव. 1799 — **18 Brumaire — नेपोलियन की सत्ता :** Directory का तख्तापलट ; नेपोलियन प्रथम कांसल बना — क्रांति की समाप्ति।

3.2 क्रांति के चरण — एक दृष्टि में

चरण	काल	मुख्य विशेषता	शासक / दल
संवैधानिक राजतंत्र	1789–92	बास्तील ; मानवाधिकार ; संविधान सभा	लुई XVI
प्रथम गणतंत्र	1792–95	लुई XVI को फाँसी ; आतंक का राज	जैकोबिन / रोब्सपियर
Directory	1795–99	भ्रष्टाचार ; अव्यवस्था	5 सदस्यीय Directory
Consulate / साम्राज्य	1799–1815	सुधार ; युद्ध ; पतन	नेपोलियन बोनापार्ट

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 4 : नेपोलियन बोनापार्ट — उदय (1799)

4.1 नेपोलियन का परिचय

तथ्य	विवरण
जन्म	15 अगस्त 1769 — Ajaccio, Corsica द्वीप
मृत्यु	5 मई 1821 — St. Helena द्वीप (निर्वासन में)
शासनकाल	1799–1815 (प्रथम कांसल → सम्राट)
प्रथम बड़ी विजय	1793 — Toulon की लड़ाई (ब्रिगेडियर जनरल बना)
इटली अभियान	1796–97 — बड़ी विजयें ; लोकप्रियता शिखर पर
मिस्र अभियान	1798 — असफल ; किंतु वापस आकर Directory का तख्तापलट
पतन का आरंभ	1812 — रूस अभियान की विफलता
अंतिम पराजय	1815 — Waterloo का युद्ध

4.2 नेपोलियन के उदय की परिस्थितियाँ

- **क्रांति का अवसर :** फ्रांस की क्रांति ने पुरातन व्यवस्था का अंत कर Meritocracy (योग्यता आधारित व्यवस्था) स्थापित की। एक साधारण Corsican सैनिक को उन्नति का अवसर मिला।
- **Directory की विफलता :** Directory के शासन में भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, महँगाई चरम पर थी। जनता एक शक्तिशाली नेता चाहती थी।
- **सैनिक विजयें :** Italy (1796–97) एवं Egypt अभियानों में विजयें — नेपोलियन की लोकप्रियता आसमान छू रही थी।
- **मध्यवर्ग का समर्थन :** मध्यवर्ग स्थायित्व एवं व्यवस्था चाहता था ; नेपोलियन उनकी आशाओं का केंद्र बन गया।
- **18 Brumaire (9 नवम्बर 1799) :** नेपोलियन ने Directory का तख्तापलट कर स्वयं को प्रथम कांसल घोषित किया।

4.3 नेपोलियन के सुधार / कार्य — ग्रेनाइट पर रखे हुए

"ग्रेनाइट पर रखे हुए" — अर्थात् ये सुधार इतने मज़बूत एवं स्थायी थे कि नेपोलियन के पतन के बाद भी बने रहे। UPPSC/UPSC PYQ 2009।

क्षेत्र	सुधार / कार्य	महत्व
① **कानूनी**	नेपोलियन Code (1804) — 2 स्थानीय कानूनों की जगह एक समान कानून ; दीवानी-फौजदारी कानूनों का स्पष्टीकरण ; निजी संपत्ति के सिद्धांत की मान्यता	आज भी 40+ देशों में कानून का आधार ; "आधुनिक Justinian"

② **आर्थिक**	बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना (1800); सट्टेबाजी पर रोक; सार्वजनिक सेवाओं में सुधार; सड़कें एवं नहरें; Enclosure को प्रोत्साहन	आर्थिक प्रगति एवं स्थिरता
③ **शिक्षा**	राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली; Lycée (माध्यमिक विद्यालय); विश्वविद्यालय; एक समान पाठ्यक्रम; सैनिक शिक्षा	आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव
④ **धार्मिक**	Concordat (1801) — पोप के साथ समझौता; कैथोलिक धर्म की पुनः मान्यता; किरकों की वापसी; पादरियों को राज्य वेतन	धार्मिक सौहार्द; राज्य का धर्म पर नियंत्रण
⑤ **प्रशासनिक**	Prefect प्रणाली — केंद्र से नियंत्रण; Meritocracy; Legion of Honour; भ्रष्टाचार पर नियंत्रण	कुशल केंद्रीकृत शासन

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 4 (जारी) : नेपोलियन के पतन के कारण

4.4 नेपोलियन का पतन — विस्तृत कारण

कारण	विस्तृत विवरण
1. महाद्वीपीय व्यवस्था की विफलता	इंग्लैंड को आर्थिक रूप से कमज़ोर करने की नीति असफल रही क्योंकि फ्रांस की नौसेना सक्षम नहीं थी। तस्करी जारी रही। यूरोपीय देश असंतुष्ट हुए।
2. स्पेन का संघर्ष (1808–14)	नेपोलियन ने स्पेन में महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने के लिए आक्रमण किया। स्पेनवासियों ने Guerrilla युद्ध द्वारा फ्रांसीसी सेना को थका दिया — "Spain का नासूर।"
3. रूस अभियान (1812)	6 लाख सैनिकों के साथ रूस आक्रमण — भीषण ठंड, लंबा Supply Chain, Moscow में आग। केवल 1 लाख सैनिक वापस लौटे। नेपोलियन की शक्ति का सर्वनाश।
4. Leipzig का युद्ध (1813)	"राष्ट्रों की लड़ाई" (Battle of Nations) — रूस, प्रशिया, ऑस्ट्रिया, स्वीडन एकजुट हुए। नेपोलियन की भारी पराजय। साम्राज्य टूटने लगा।
5. राजनीतिक भूल	नेपोलियन ने एक साथ पश्चिम (इंग्लैंड) एवं पूर्व (रूस) दोनों से युद्ध किया। किसी बड़ी शक्ति का सहयोग नहीं मिला; राष्ट्रों के संगठन ने पराजित किया।
6. Waterloo का युद्ध (1815)	अंतिम पराजय — Duke of Wellington (इंग्लैंड) एवं Blücher (प्रशिया) ने हराया। नेपोलियन ने समर्पण किया। St. Helena द्वीप पर निर्वासन।
7. राष्ट्रवाद की प्रतिक्रिया	नेपोलियन ने जिन देशों पर विजय प्राप्त की, वहाँ क्रांति के राष्ट्रवादी विचारों ने उसके विरुद्ध ही प्रतिरोध जागृत किया। स्पेन, जर्मनी, रूस में राष्ट्रीय प्रतिरोध उठा।

4.5 नेपोलियन — नायक बनाम खलनायक

नायक के रूप में ✓	खलनायक के रूप में ✗
क्रांति के सिद्धांतों को यूरोप में फैलाया	निरंकुश एकाधिकारवादी शासन स्थापित किया
नेपोलियन Code — आज भी कानून का आधार	लाखों लोगों की युद्ध में मृत्यु
समता एवं योग्यता को महत्व दिया	स्वतंत्रता की भावना को दबाया; Press Censorship
राष्ट्रीय बैंक, सड़कें, शिक्षा की नींव	साम्राज्यवाद को आधार दिया
Concordat — धार्मिक सद्भावना कायम की	दास प्रथा को पुनः लागू किया (1802)
Meritocracy — योग्यता को सर्वोच्चता	नारी शिक्षा में कोई रुचि नहीं

★ निष्कर्ष : नेपोलियन क्रांति का शिशु एवं क्रांति का हंता — दोनों था। क्रांति से उत्पन्न परिस्थितियों ने उसे ऊपर उठाया, किंतु उसने स्वयं क्रांति के आदर्शों का विनाश किया।

अध्याय 5 : महाद्वीपीय व्यवस्था एवं वियना कांग्रेस

5.1 महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) — 1806

नेपोलियन द्वारा इंग्लैंड के विरुद्ध **आर्थिक नाकाबंदी** को 'Continental System' कहते हैं। Berlin घोषणा (1806) एवं Milan घोषणा (1807) द्वारा लागू की गई।

विशेषता	विवरण
उद्देश्य	इंग्लैंड को यूरोपीय बाज़ार से बंद कर आर्थिक रूप से कमज़ोर करना
कार्य विधि	सारी यूरोपीय बंदरगाहों पर अंग्रेज़ी माल पर प्रतिबंध
क्यों असफल रही ?	कमज़ोर नौसेना ; तस्करी ; यूरोपीय देशों का असंतोष ; रूस का विरोध ; स्पेन-पुर्तगाल ने नहीं माना
परिणाम	नेपोलियन का स्पेन एवं रूस से संघर्ष → पतन का कारण बनी

5.2 वियना कांग्रेस 1815 (यूरोपीय व्यवस्था)

1815 में वियना (ऑस्ट्रिया) में नेपोलियन की पराजय के बाद यूरोपीय व्यवस्था पुनर्स्थापित करने हेतु बड़ी बैठक हुई। अध्यक्ष — **Metternich** (ऑस्ट्रिया)।

सिद्धांत	अर्थ	उदाहरण
प्रत्यास्थापन (Legitimacy)	पूर्व राजवंशों की पुनःस्थापना	Bourbon वंश को फ्रांस में वापस लाया
शक्ति संतुलन (Balance of Power)	किसी एक देश को अधिक शक्ति न मिले	प्रशिया को पश्चिम में भूमि दी
क्षतिपूर्ति (Compensation)	युद्ध में नुकसान उठाने वालों को मुआवज़ा	ऑस्ट्रिया को उत्तरी इटली
फ्रांस का घेराव	फ्रांस के चारों तरफ मज़बूत राज्यों की पट्टी	Netherlands, Sardinia को बढ़ाया

वियना कांग्रेस का महत्व : यह प्रथम अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का प्रयास था। किंतु यह प्रतिक्रियावादी थी — क्रांति एवं राष्ट्रवाद के विरुद्ध। इसने 1848 की क्रांतियों के लिए भूमि तैयार की।

5.3 फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव — एक दृष्टि में

क्षेत्र	प्रभाव
राजनीतिक	निरंकुश राजतंत्र का अंत ; गणतंत्र की स्थापना ; संवैधानिक शासन ; राष्ट्रवाद का उदय
सामाजिक	सामंतवाद का अंत ; मानवाधिकारों की घोषणा ; सामाजिक समता ; मध्यवर्ग का उदय

आर्थिक	कुलीनों के विशेषाधिकार समाप्त ; भू-सुधार ; नेपोलियन Code से मुक्त व्यापार
वैश्विक	इटली-जर्मनी एकीकरण ; Latin America की क्रांतियाँ ; भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव
विचारधारा	उदारवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद को नई प्रेरणा ; लोकतंत्र की स्थापना की विश्वव्यापी माँग

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 6 : क्रांति का स्वरूप एवं तुलनात्मक अध्ययन

6.1 क्रांति का स्वरूप — विभिन्न दृष्टिकोण

स्वरूप	विवरण	निष्कर्ष
मध्यवर्गीय स्वरूप	क्रांति की मानसिक चेतना मध्यवर्ग के बुद्धिजीवियों ने बनाई ; नेतृत्व मध्यवर्ग का ; संविधान में संपत्ति अधिकार ; कर चुकाने वालों को मताधिकार	मध्यवर्गीय स्वरूप है, किंतु सभी वर्ग भागीदार थे
उगतिशील स्वरूप	निरंकुश राजतंत्र का अंत ; मानवाधिकार घोषणा ; सामंतवाद का पतन ; धर्मनिरपेक्ष राज्य ; राष्ट्रवाद का प्रसार	प्रगतिशील / उगतिशील स्वरूप
सुनियोजित नहीं	नेपोलियन ने निरंकुश शासन ; पुरानी व्यवस्था वापस ; कृत्रिम कुलीन वर्ग ; दास प्रथा पुनः लागू	रूसी क्रांति जैसी सुनियोजित नहीं
विश्वव्यापी क्रांति	फ्रांस के नारे विश्व में फैले ; इटली-जर्मनी एकीकरण ; Latin America; भारत पर प्रभाव	यूरोप की क्रांति बन गई

6.2 पुरातन फ्रांस बनाम नेपोलियन कालीन फ्रांस — तुलना

विषयक	पुरातन फ्रांस (1789 से पूर्व)	क्रांतिकालीन (1789–99)	नेपोलियन (1799–1815)
राजनीतिक सत्ता	निरंकुश राजतंत्र	संवैधानिक / गणतंत्र	निरंकुश केंद्र सत्ता
सामंतवाद	पूर्णतः विद्यमान	समाप्त घोषित	कृत्रिम कुलीन वर्ग
कानून	असमान ; भिन्न	नवीन संविधान	नेपोलियन Code
धर्म नीति	चर्च का प्रभुत्व	धर्मनिरपेक्ष	Concordat से सुलह
दास प्रथा	मौजूद	समाप्त घोषित	पुनः लागू की
व्यापार	राज्य नियंत्रित	मुक्त व्यापार का आरंभ	महाद्वीपीय व्यवस्था

★ UPSC/UPPSC परीक्षा उपयोगी : पुरातन vs नवीन फ्रांस की तुलना 200 शब्दों में लिखने की अभ्यास करें।

★ UPPSC MAINS PYQ 2024 — प्रश्न 1

"नेपोलियन क्रांति का पुत्र था।" — व्याख्या कीजिए।

(UPPSC Mains 2024 | अनुशंसित शब्द सीमा : 200–250 शब्द)

उत्तर — मॉडल उत्तर (Model Answer)

प्रस्तावना (Introduction)

नेपोलियन बोनापार्ट (1769–1821) को "क्रांति का पुत्र" इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह फ्रांसीसी क्रांति (1789) द्वारा निर्मित परिस्थितियों की ही उपज था। बिना क्रांति के न तो उसका उदय संभव था, न ही उसके सुधार।

नेपोलियन क्रांति का पुत्र — प्रमाण

- **1. Meritocracy का लाभ :** फ्रांसीसी क्रांति ने पुरातन व्यवस्था का अंत कर योग्यता-आधारित व्यवस्था (Meritocracy) स्थापित की। इससे एक साधारण Corsican सैनिक — नेपोलियन — को उन्नति का अवसर मिला। पुरातन व्यवस्था में वह कभी सेनापति नहीं बन सकता था।
- **2. क्रांति के सिद्धांतों का प्रचार :** नेपोलियन ने अपने यूरोपीय अभियानों में स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व के क्रांतिकारी सिद्धांत फैलाए। उसकी सेनाएँ जहाँ भी गईं, वहाँ सामंतवाद एवं निरंकुश राजतंत्र का अंत हुआ।
- **3. क्रांतिकारी परिस्थितियों से लाभ :** Directory के शासन की विफलता (1795–99) — भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, अव्यवस्था — ने नेपोलियन को सत्ता में आने का मार्ग प्रशस्त किया। वह इन्हीं क्रांतिकारी परिस्थितियों की देन था।
- **4. नेपोलियन Code — क्रांति की विरासत :** नेपोलियन Code में क्रांति के मूल्यों — कानून के समक्ष समानता, धर्मनिरपेक्षता, संपत्ति का अधिकार — का समावेश था। यह क्रांति की ही परिणति था।
- **5. राष्ट्रवाद का प्रसार :** नेपोलियन ने क्रांति की राष्ट्रवादी भावना को यूरोप में फैलाया — इटली, जर्मनी, पोलैंड में राष्ट्रवाद जागृत हुआ।

वैकल्पिक दृष्टिकोण — क्रांति का हंता भी

किंतु नेपोलियन क्रांति का हंता भी था — उसने निरंकुश शासन स्थापित किया, दास प्रथा पुनः लागू की, कृत्रिम कुलीन वर्ग बनाया, और स्वतंत्रता की भावना को दबाया।

✔ **निष्कर्ष :** नेपोलियन क्रांति का पुत्र इसलिए था क्योंकि उसका जन्म, उदय, शक्ति एवं सुधार सभी फ्रांसीसी क्रांति की परिस्थितियों की ही देन थे। वह क्रांति के बिना कभी संभव नहीं होता। इसीलिए उसे "क्रांति का पुत्र" कहना पूर्णतः उचित है।

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

★ UPPSC MAINS PYQ 2024 — प्रश्न 2

"फ्रांस की क्रांति प्रबोधनकाल का सुपरिणाम थी।" — टिप्पणी कीजिए।

(UPPSC Mains 2024 | अनुशंसित शब्द सीमा : 200–250 शब्द)

उत्तर — मॉडल उत्तर (Model Answer)

प्रस्तावना (Introduction)

प्रबोधनकाल (Enlightenment / Age of Reason) 17वीं-18वीं शताब्दी में यूरोप में उभरा वह बौद्धिक आंदोलन था जिसने तर्क, विज्ञान एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सर्वोच्च महत्व दिया। इस काल के विचारकों ने चर्च की निरंकुशता, राजशाही के दैवीय अधिकार एवं सामंती व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाए — और इन्हीं विचारों का व्यावहारिक परिणाम 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के रूप में सामने आया।

प्रबोधनकाल के प्रमुख विचार जो क्रांति बने

- **1. रूसो की जन-इच्छा (General Will):** रूसो ने कहा — "मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है, किंतु सर्वत्र ज़ंजीरों में है।" उनके "सामाजिक समझौता" सिद्धांत ने जनता को यह विश्वास दिलाया कि शासन का अधिकार राजा को नहीं, जनता को है। क्रांति के दौरान "जन-इच्छा" का नारा क्रांतिकारियों की प्रेरणा बना।
- **2. मॉन्टेस्क्यू का शक्ति पृथक्करण :** "Spirit of Laws" में मॉन्टेस्क्यू ने विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका को पृथक रखने की वकालत की। फ्रांसीसी क्रांति ने इसी आधार पर नवीन संविधान बनाया।
- **3. वॉल्टेयर की धर्मनिरपेक्षता :** वॉल्टेयर ने चर्च की असहिष्णुता एवं अंधविश्वास पर प्रहार किया। क्रांति के दौरान चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण एवं धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना वॉल्टेयर के विचारों की ही व्यावहारिक अभिव्यक्ति थी।
- **4. लॉक के प्राकृतिक अधिकार :** जॉन लॉक के "जीवन, संपत्ति एवं स्वतंत्रता" के प्राकृतिक अधिकार सिद्धांत ने 26 अगस्त 1789 की "मानवाधिकारों की घोषणा" का आधार बनाया।
- **5. फिज़ियोक्रेट्स की आर्थिक विचारधारा :** Quesnay एवं Turgot जैसे अर्थशास्त्रियों ने कर-सुधार एवं मुक्त व्यापार की माँग की — क्रांति के आर्थिक सुधारों का यही आधार था।

प्रबोधनकाल एवं क्रांति — साक्ष्य

प्रबोधनकाल का विचार	क्रांति में व्यावहारिक रूप
राजा नहीं, जनता सर्वोच्च (रूसो)	राष्ट्रीय सभा की घोषणा ; लुई XVI को फाँसी
शक्ति पृथक्करण (मॉन्टेस्क्यू)	1791 का संविधान — तीन शक्तियाँ पृथक्
धर्म निरपेक्षता (वॉल्टेयर)	चर्च का राष्ट्रीयकरण ; धर्मनिरपेक्ष राज्य
प्राकृतिक अधिकार (लॉक)	26 अगस्त 1789 — मानवाधिकारों की घोषणा
कर सुधार (Physiocrats)	समान कर प्रणाली ; सामंती करों का उन्मूलन

✔ **निष्कर्ष :** फ्रांसीसी क्रांति प्रबोधनकाल का सुपरिणाम थी क्योंकि इसके मूल्य — स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, धर्मनिरपेक्षता, जन-संप्रभुता — सब प्रबोधनकालीन विचारों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति थे। दार्शनिकों ने क्रांति नहीं की, किंतु उन्होंने वह वैचारिक ज़मीन तैयार की जिस पर क्रांति का वृक्ष उगा। इसीलिए कहा जाता है कि फ्रांसीसी क्रांति प्रबोधनकाल का सुपरिणाम थी।

— UPPSC Mains 2024 | CSMP IAS, Lucknow | www.csmpias.com

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 7 : महत्वपूर्ण शब्दावली एवं तिथिक्रम

7.1 महत्वपूर्ण शब्दावली (Key Terms)

शब्द / Term	हिंदी अर्थ	UPSC महत्व
Ancien Régime	पुरातन व्यवस्था — क्रांति से पूर्व की तीन एस्टेट प्रणाली	★★★
Estates General	तीनों वर्गों की फ्रांसीसी प्राचीन संसद	★★★
Tennis Court Oath	टेनिस कोर्ट की शपथ — 20 जून 1789	★★★
Bastille	पेरिस का राजकीय किला-जेल; 14 जुलाई 1789 को तोड़ा	★★★
Guillotine	फाँसी का यंत्र — आतंक के राज में प्रयोग	★★
Jacobins	उग्रवादी राजनीतिक दल — रोब्सपियर का दल	★★★
Girondins	उदारवादी राजनीतिक दल — मध्यमार्गी	★★
Reign of Terror	आतंक का राज (1793–94) — रोब्सपियर का निरंकुश शासन	★★★
Napoleon Code	नेपोलियन की कानून संहिता 1804 — आज भी 40+ देशों में लागू	★★★
Continental System	महाद्वीपीय नाकाबंदी — इंग्लैंड के विरुद्ध आर्थिक युद्ध	★★★
Concordat	नेपोलियन-पोप समझौता 1801 — धार्मिक सुलह	★★
Metternich	ऑस्ट्रिया का चांसलर — वियना कांग्रेस का अध्यक्ष	★★★
Enlightenment / प्रबोधनकाल	17-18वीं शताब्दी का बौद्धिक आंदोलन — तर्क, विज्ञान, स्वतंत्रता	★★★
General Will / जन-इच्छा	रूसो का सिद्धांत — जनता की सामूहिक इच्छा ही सर्वोच्च है	★★★
18 Brumaire	9 नवम्बर 1799 — नेपोलियन का तख्तापलट	★★★
Guerrilla Warfare	छापामार युद्ध — स्पेनवासियों ने नेपोलियन के विरुद्ध किया	★★

7.2 नेपोलियन — प्रमुख तिथिक्रम

तिथि	घटना
1769	नेपोलियन का जन्म — Corsica द्वीप
1793	Toulon की लड़ाई — पहली बड़ी विजय; ब्रिगेडियर जनरल बना
1796–97	Italy अभियान — भारी विजयें; लोकप्रियता शिखर पर
9 नव. 1799	18 Brumaire — Directory का तख्तापलट; प्रथम कांसल बना

1801	Concordat — पोप के साथ धार्मिक समझौता
1804	नेपोलियन Code; स्वयं को सम्राट घोषित किया
1806	महाद्वीपीय व्यवस्था — Berlin घोषणा
1812	रूस अभियान — भारी विफलता ; पतन का आरंभ
1813	Leipzig की लड़ाई — "राष्ट्रों की लड़ाई" ; भारी पराजय
1815	Waterloo की पराजय ; वियना कांग्रेस ; St. Helena निर्वासन
1821	नेपोलियन की मृत्यु — St. Helena द्वीप पर

CSMP IAS
CSMP IAS
CSMP IAS

अध्याय 8 : परीक्षा रणनीति एवं PYQ सूची

8.1 UPSC/UPPSC में फ्रांसीसी क्रांति से प्रमुख प्रश्न

वर्ष	परीक्षा	प्रश्न	शब्द सीमा
2024	**UPPSC Mains**	**"नेपोलियन क्रांति का पुत्र था।" — व्याख्या कीजिए।**	**200–250**
2024	**UPPSC Mains**	**"फ्रांस की क्रांति प्रबोधनकाल का सुपरिणाम थी।" — टिप्पणी कीजिए।**	**200–250**
2019	UPSC Mains	फ्रांस की क्रांति ने तीन मूर्तों की जानकारी दी — टिप्पणी।	150
2015	UPSC Mains	महाद्वीपीय व्यवस्था के असफलता के कारणों का परीक्षण कीजिए।	200
2013	UPSC Mains	नेपोलियन क्रांति का शिशु एवं क्रांति का हंता था — टिप्पणी।	200
2009	UPSC Mains	नेपोलियन के सुधार ग्रेनाइट पर रखे हुए थे — टिप्पणी।	60
2007	UPSC Mains	"नेपोलियन पति नहीं है।" — टिप्पणी।	60
2005	UPSC Mains	नेपोलियन ने नवीन फ्रांस को प्राचीन फ्रांस से जोड़ा — समीक्षा।	200
2003	UPSC Mains	फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण।	200

8.2 UPPSC/UPSC उत्तर लेखन संरचना

भाग	क्या लिखें	शब्द
प्रस्तावना	क्रांति/विषय का संक्षिप्त परिचय ; मुख्य कथन/प्रश्न को स्पष्ट करें	40–50
मुख्य भाग	तर्क-सहित बिंदुवार विश्लेषण ; उदाहरण ; तिथियाँ ; प्रमाण	100–150
वैकल्पिक दृष्टिकोण	विपरीत मत भी प्रस्तुत करें — संतुलित उत्तर	30–40
निष्कर्ष	संतुलित निष्कर्ष ; प्रश्न के उत्तर की पुनः पुष्टि	30–40

8.3 परीक्षा में याद रखने योग्य महत्वपूर्ण उद्धरण

💬 **रूसो :** "Man is born free, but everywhere he is in chains." — मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है, किंतु सर्वत्र ज़ंजीरों में है।

💬 **वॉल्टेयर :** "I disapprove of what you say, but I will defend to the death your right to say it." — अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रतीक।

💬 **मॉन्टेस्क्यू :** "Power should check power." — शक्तियों के पृथक्करण का सार।

💬 **नेपोलियन :** "Every soldier carries a marshal's baton in his pack." — Meritocracy का प्रतीक।

★ CSMP IAS — परीक्षा रणनीति :

- फ्रांसीसी क्रांति से UPSC Mains में प्रत्येक वर्ष 1–2 प्रश्न आते हैं।
- UPPSC 2024 में दोनों प्रश्न इसी विषय से आए — अत्यधिक महत्वपूर्ण।
- नेपोलियन के सुधार एवं पतन के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- दार्शनिकों की भूमिका एवं प्रबोधनकाल पर विस्तृत उत्तर लिखने का अभ्यास करें।
- वियना कांग्रेस एवं महाद्वीपीय व्यवस्था — PYQ में बार-बार पूछे गए हैं।

✆ अधिक जानकारी के लिए : +91 8887039761 | 🌐 www.csmpias.com

CSMP IAS
गोमती नगर, लखनऊ
✆ +91 8887039761 | 🌐 www.csmpias.com
© CSMP IAS | सर्वाधिकार सुरक्षित | UPSC/UPPSC विशेष अध्ययन सामग्री